संपादकीय

पिछले दिनों पेड़-पौधों तथा वनस्पति जगत से जुड़ी दो अलग-अलग चौंकाने वाली खबरें पढ़ीं, पहली खबर यह कि, इस नीले ग्रह पर पारिस्थितिकी तथा जैव विविधता को बनाए रखने, के लिए पेड़-पौधों की न्यूनतम आवश्यक तय मात्रा, से भी 16% और कम वनस्पतियां मात्र ही अब बची हैं। यानी कि इस ग्रह की सबसे ज्यादा बुद्धिमान प्रजाति 'होमो सेपियंस' ने खतरे के अंतिम निशान को भी बड़ी सहजता से पार कर लिया है, और अब महाविनाश के अंतिम दरवाजे पर बेफिक्र खड़े होकर कुंडी खड़का रही है।

दूसरी खबर, खुशखबरी का चोला पहनकर आई कि,अब पौधों में 'बायोफोर्टिफिकेशन' की वैज्ञानिक प्रक्रिया के द्वारा हमारे भोजन की पोषक गुणवत्ता बढ़ाई जाएगी। निश्चित रूप से यह पेड़-पौधों, फसलों की अनुवांशिकी में व्यापक परिवर्तन करके ही किया जाएगा। भूख तथा विशेष रूप से कुपोषण से लड़ाई में, इसे मानव के सबसे सशक्त हथियार के रूप में साबित किया जा रहा है। हमने आलू, चावल, बैंगन, सरसों, कपास जैसी कई फसलों के अनुवांशिक गुणों में जबरदस्त परिवर्तन करके रोग प्रतिरोधक तथा अधिक उत्पादन देने वाली किस्मों का बेहद मंहगा तोहफा अपनी आने वाली पीढ़ियों को तो दे ही दिया है। एक पेड़ पर कई तरह के फल, कई रंगों के फूल आदि उगाने के करतब तो अब बहुत ही पुराने हो चले हैं। पर यहां पर एक बहुत बड़ा यक्ष प्रश्न आन खड़ा होता है, कि क्या सचमुच हमें पेड़-पौधों, जीव-जंतुओं की आनुवंशिकी के साथ इस तरह की व्यापक छेड़छाड़ करनी चाहिए भी अथवा नहीं? क्या सचमुच इसके दूरगामी परिणाम मानव प्रजाति तथा इस समूचे ग्रह के समस्त जीवों के लिए लाभदायक तथा उपयोगी होंगे? या फिर हम जानबूझकर किसी अज्ञात गंभीर खतरे को आमंत्रित कर रहे हैं?

साक्षात्कार

छत्तीसगढ़ी लोक कला मंच

(**दाऊ रामचंद्र देशमुख** और **चंदैनी गोंदा** नाट्य पार्टी का अवदान)

भाषा, साहित्य और संस्कृति के वरिष्ठ विद्वान **बिहारी लाल साहू** से **डुमन लाल ध्रुव** द्वारा
दाऊ रामचंद्र के व्यक्तित्व पर केंद्रित की गई बातचीत

दाऊ रामचंद्र देशमुख
(जन्मः 12.10.16
निधनः 14.01.98)

बहुत बड़ी धरती में जैसे फूलों का बगीचा हो अंचल। लेकिन फूल जितने सुंदर होते हैं, उतने ही सुकोमल भी। जरा सी गर्मी उन्हें झुलसा देती है। अनेक स्तरों की तपिश से अंचल सूखते रहे हैं। अपनी दर्द भरी कथा कहते रहे हैं। अंचलों का दर्द समुच्चय में, सारे देश का दर्द बन जाता है। बहुत कम लोग होते हैं, जो इस दर्द को महसूस कर पाते हैं। दाऊ रामचंद्र देशमुख उनमें से एक थे, जिन्होंने छत्तीसगढ़ के दर्द को न केवल महसूसा, वरन् उसकी मर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति दी--लोकमंचों के माध्यम से। उन्होंने अपनी तमाम उम्र के पचास वर्ष सांस्कृतिक यज्ञ की वेदी में झोंक दिए।--- **सुरेश देशमुख, धमतरी**

छत्तीसगढ़ लोक कला के उद्धारक और लोक कला मंच को अक्षुण्ण रखने का प्रथम प्रयास करने वाले दाऊ रामचंद्र देशमुख छत्तीसगढ़ महतारी के कृती-पुत्र थे। उन्होंने छत्तीसगढ़ लोक कला मंचों का परिमार्जन-परिष्करण किया और उन्हें छत्तीसगढ़ के उन्नयन का प्रभावी आधार बनाया। फलतः उनकी कलासृष्टियां प्रभावोत्पादक सिद्ध हुईं। दाऊ रामचंद्र का जन्म दुर्ग के बघेरा नामक गांव में हुआ था। सन् 1951 में इन्होंने 'देहाती कला मंच' की स्थापना की इसके अंतर्गत काली माटी, बंगाल का अकाल, सरग अऊ नरक, रायसाहब मि. भोंदू खान साहब नालायक अली खां, मिस मेरी का डांस जैसे दमदार और प्रभावशाली प्रहसन प्रदर्शित किए। सन् 1971 में इन्होंने 'चंदैनी गोंदा' नाट्य पार्टी का निर्माण किया। चंदैनी गोंदा के बाद पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी की कहानी 'कारी' को 1983 में अभिनीत किया गया जिसने पूरे अंचल में धूम मचा दी।

दाऊ जी के व्यक्तित्व का कौन सा पहलू आपको प्रभावित करता है?

मेरी दृष्टि में दाऊ जी का व्यक्तित्व असाधारण था, किंतु उनका व्यवहार एकदम सामान्य, सहज और सरल, छत्तीसगढ़िया सियानों सा मयातुर। अन्यथा, लोकप्रियता के शिखर पर अधिष्ठित लोग कहां सामान्य रह पाते हैं? पर दाऊ जी अपनी सामान्यता में भी चौकस और अनुशासनबद्ध थे। यही कारण है कि वे कलामंच के कोमल हृदयी कलाकारों की आत्मीय अनुशासन के दुर्लभ्य घेरे में उन्हें नियोजित कर सके। दाऊ जी का व्यक्तित्व पूर्णतः सकर्मक था। एक ओर वे लाठी पकड़कर मंच पर अभिनय भी कर लेते थे तो दूसरी ओर नेपथ्य में खड़े रहकर निर्देशन का सचेतन कार्य भी धैर्यपूर्वक कर लेते थे। सच्चे अर्थों में वे दृढ़ संकल्पवती थे। उन्हें जुनून था तो सिर्फ अपने काम का और उसके अंजाम का। उनका समूचा व्यक्तित्व बेहद प्रभावशाली, आकर्षण था, उसे खंड-खंड में देखना और आंकना असंभव है।

दाऊ जी की किन-किन प्रस्तुतियों को आपने देखा है, कब और कहां ?

दाऊ जी की सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति 'चंदैनी गोंदा' और आनुषंगिक प्रस्तुतियों 'एक रात की स्त्री राज' तथा 'देवार डेरा' को मैंने अनेक बार देखा है। आज मेरे लिए उन प्रस्तुतियों की मंचन तिथि एवं स्थान तफसील के साथ बता पाना दुष्कर होगा। किंतु, आज भी मेरी स्मृति में रायपुर के माधव राव सप्रे विद्यालय के प्रांगण में की गई 'चंदैनी गोंदा' की प्रस्तुति अक्षुण्ण है। तब वहां दर्शकों की

डॉ. बिहारी लाल

डॉ. डुमन लाल ध्रुव
मुजगहन धमतरी छ.ग.
पिन 493773
मो. 09424210208